21वीं सदी में भारतीय समाज में सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन

डा० रश्मि पाण्डेय, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
अकबरपुर महाविद्यालय अकबरपुर, कानपुर देहात

https://doi.org/10.61410/had.v19i1.170

शोध सारांश

वर्तमान समय में संस्कृति समाज का पुननिर्माण कर रही है, और संस्कृति का पुननिर्माण अर्थ व्यवस्था कर रही है। भारतीय संस्कृति का अर्थ है। भारतीय धर्म, (भारतीयता) भारतीयता कोई संवैधानिक, वैधानिक या विधिक अधिकार नहीं है, यह धर्म, जन्म, जाति से संबंधित नही है। भारतीयता तो एक एहसास है जो स्वामी विवेकानंद, भूत पूर्व राष्ट्रपति, स्वर्गीय ए०पी०जे०अब्दुल कलाम, रामकृष्ण परमहंस, कल्पना चावला, और उनके जैसे ही और अन्य महापुरूष, जिनके ह्रदय में भारत के गौरव के लिए जान देना एक साधारण बात थी, क्योंकि भारतीयता स्वार्थ नहीं, बल्कि परमार्थ सिखाती है। भारत एक कल्याणकारी राज्य के रूप में सभी के हितों का ध्यान और सुरक्षा व्यवस्था बनाये रखने में सक्षम हुआ। सभी लोगों को अवसरों की समानता देश में सम्पत्ति का उचित वितरण भी सरकार की प्रमुख जिम्मेदारी है। अमेरिका विश्व की प्रथम अर्थव्यवस्था है इसी लिए अमेरिका यूरोप एशिया सहित विश्व के महान द्वीपों में अपनी सांस्कृतिक छाप छोड़ने में सफल रहा है अमेरिकी सामाजिक संस्कृति अर्थात उपभोक्ता वाद संस्कृति जो यूज एंड थ्रो वाली संस्कृति में विश्वास करती है इसी लिए, सामान के साथ–साथ उसने रिश्तों में भी हल्का पान वितरित कर दिया। आज भारत का आदर्श, आदर्शवाद नही उदार वाद है, लौकिकीकरण के कारण रामायण, गीता सांस्कृतिक धार्मिक ग्रंथ नहीं है, किसी धर्म से जुड़े हुए नहीं है, बल्कि यह सामाजिक ग्रंथ है। योग धर्म से नहीं बल्कि स्वास्थ्य व संस्कृति से जुड़ा हुआ है। इसरो चंद्रयान से वह आज सब कर रहा है जो, नासा और रूस 1970 के दशक में कर चुके हैं, बहुत समय बाद ही सही पर कैपेबिलिटी डेमोंसट्रेशन विश्व के सामने अपनी क्षमता का प्रदर्शन करना यह किसी भी देश के लिए बहुत आवश्यक है। अंतरिक्ष और सैटेलाइट प्रक्षेपण का एक बहुत बड़ा बाजार है, अभी तक नासा और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी का ही आधिपत्य था, कुछ हिस्सा रूस और जापान का भी, लेकिन भारत के वैज्ञानिकों ने उनकी तुलना में बहुत कम खर्च पर यह प्रक्षेपण करके यह सिद्ध किया है कि भारत एक नए रूप में आज सामने आ रहा है।

वर्तमान समय में संस्कृति समाज का पुन निर्माण कर रही है, और संस्कृति का पुन निर्माण अर्थव्यवस्था कर रही है। भारतीय संस्कृति का अर्थ है भारतीय धर्म, (भारतीयता) भारतीयता कोई संवैधानिक, वैधानिक या विधिक अधिकार नहीं है, यह धर्म, जन्म, जाति से संबंधित नही है। भारतीयतातो एक एहसास है जो स्वामी विवेकानंद, भूत पूर्व राष्ट्रपति, स्वर्गीय ए०पी०जे०अब्दुल कलाम, रामकृष्ण परमहंस, कल्पना चावला, और उनके जैसे ही और अन्य महापुरूष, जिनके ह्रदय में भारत के गौरव के लिए जान देना एक साधारण बात थी, क्योंकि भारतीयता स्वार्थ नहीं, बल्कि परमार्थ सिखाती है। यह सब को साथ लेकर आगे चलना सिखाती है। कमला है रिसहो या ऋषि सुनक या सुन्दर पिचाई या सत्यान डेला सभी बड़े गर्व के साथ इस भारतीयता को अपनात`हैं।

अंग्रेज जब भारत आए उन्होंने यह देखा कि यहां तो स्वाभिमान व्यक्ति की रगों में बसा हुआ है। तब कॉलोनियल स्टेट ऑफ माइंड के माध्यम से पिछड़े पन का बीजारोपण किया गया। भारतीय संस्कृति, साहित्य ज्ञान पद्धतियां कार्य करने का तरीका धर्म, अध्यात्म यह सभी पिछड़े हुए हैं, यह मानने के लिए विवश किया गया। लॉर्ड मैकाले ने भारत में आकर यहां अध्ययन किया। अपने अवलोकन में उसने यह पाया कि यहां के लोगों पर शासन करना आसान नहीं है, क्योंकि सभी के स्वाभिमान का स्तर बहुत ऊँचा है। इसीलिए लॉर्ड मैकाले ने अपने पिता को एक पत्र के माध्यम से यह सूचित भी किया कि इन हिंदुस्तानियों पर तभी शासन किया जा सकता है जब, इन्हें यह एहसास दिलाया जाए कि यह पिछड़े हुए हैं और उनके स्वाभिमान को आत्महीनता से बदल दिया जाए और यही किया गया। पश्चिमी विचार और संस्कृति ही सर्वथा योग्य है, आधुनिकता ही प्रगति है, ऐसे विचार समाज में शिक्षा के माध्यम से प्रचारित प्रसारित किए गए। साम्यवाद के प्रभाव से धर्म, पूंजी, भारतीय परंपरा और भारतीय मूल्यों का विरोध भी प्रारंभ हुआ। छदम बौद्धिकता को समर्थन मिला, अंग्रेजों का विरोध तो भारतीयों ने किया लेकिन अंग्रेजी व अंग्रेजियत का समर्थन फैशन बन गया। उपयोगिता वादी विचारधारा भी शुरू हो गई। स्वतंत्रता के 50 वर्ष भारतीय सांस्कृतिक प्रतिबद्धताओं के

शमन का समय कहा जा सकता है। इसी समय निहित स्वार्थ के लिए धर्मनिरपेक्षता के मुखौटे का भी व्यापक प्रयोग हुआ और इसे आधुनिकता प्रगति शीलता कहा गया इसे रेखीय परिवर्तन के अंतर्गत रखा जा सकता है। इलियट ने एक बार कहा था कि भारत पर कोई भी शक्ति राज कर लेगी, यदि हिन्दू और मुसलमान आपस में लड़ते रहे। भारत एक कल्याणकारी राज्य के रूप में सभी के हितों का ध्यान और सुरक्षा व्यवस्था बनाये रखने में सक्षम हुआ। सभी लोगों को अवसरों की समानता देश में सम्पत्ति का उचित वितरण भी सरकार की प्रमुख जिम्मेदारी है।

अमेरिका विश्व की प्रथम अर्थव्यवस्था है इसीलिए अमेरिका यूरोप एशिया सहित विश्व के महान द्वीपों में अपनी सांस्कृतिक छाप छोड़ने में सफल रहा है जिसका उद्देश्य स्पष्ट है कि वह अपने उत्पाद, आविष्कार अन्य देशों को बेच सके। इस प्रकार अमेरिका का उद्देश्य प्रत्येक देश की राष्ट्रीय संस्कृति को न्यू वर्ता पर लाना था इसके लिए अमेरिका का सबसे बड़ा हथियार संस्कृति एक रूपित होना ही कहा जा सकता है। अमेरिकी सामाजिक संस्कृति अर्थात उपभोक्तावाद संस्कृति जो यूज एंड थ्रो वाली संस्कृति में विश्वास करती है इसीलिए, सामान के साथ–साथ उसने रिश्तों में भी हल्कापन वितरित कर दिया। निजता की चाहत, व्यक्तिगत अधिक स्वतंत्रता की आकांक्षा, सामाजिक विधि की न्यूवता और राजकीय विधि की उच्चता, आभासी समाज व संस्कृति, विभिन्न प्रकार की अप संस्कृतियों जिन्होंने एक विवाह प्रणाली नष्ट कर, लिव इनरिलेशन, बेवफाई में बेतहाशा वृद्धि की, जिससे विभिन्न प्रकार के व्यभिचार और अपराधों में भी वृद्धि हुई। यह सुखवाद बंधनमुक्ति की बात करता है, और यही वर्तमान समाज का वास्तविक व्यवहार वाद भी बनता गया।

कुछ समय पहले विद्यालयों की परीक्षाओं में निबन्ध का सबसे प्रचलित विषय ''प्रौद्योगिकीः'' वरदान या अभिशाप होता था, उस समय प्रौद्योगिकी एक विकल्प या पसन्द थी समाज के विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के जीवन को बहतर बनाने का कार्य करती थी। जबकि सामान्य जनको एक फोन करने के लिए एस.टी.डी, पी०सी०ओ० बूथ पर जाना पड़ता था।व यक्तिगत फोन नहीं होते थे।

पश्चिमीकरण ने बाजारवाद को बढ़ा वादिया, इसने कौशल विकास में वृद्धि की, उद्योगों में भी तीव्रता आई, परंपराओं व संस्कृति की निरंतरता बढ़ने से कलात्मक अभिरूचियां बढ़ गई, लोग अधिक धार्मिक हुए, जबकि अमेरिकीकरण ने उपभोक्तावाद को बढ़ा वादिया, उसने स्किल डेवलपमेंट की बात की, फैशन पर अधिक बल दिया गया। संस्कृति के स्थान पर केवल सभ्यता पर जोर दिया गया और उपयोगितावाद ने व्यक्ति को उतना ही धार्मिक बनने पर बल दिया जितनी उसे जब आवश्यकता पड़े।

1990 के दशक के बाद से आधुनिकता से उत्तर आधुनिकता की ओर के उत्प्रेरक कारक, पूंजीवाद, नव पूंजीवाद का विकास एवं साम्यवाद का पतन, संयुक्तराष्ट्र का विघटन, प्रौद्योगिकी में क्रांति, जिससे तार्किकता में वृद्धि, उदारवाद का प्रभाव, जिसमें छन्नी के सिद्धांत (ट्रिकल डाउन इकोनॉमी) की बात की गई। आज भारत का आदर्श, आदर्शवाद नही उदारवाद है, लौकीकिकरण के कारण रामायण, गीता सांस्कृतिक धार्मिक ग्रंथ नहीं है, किसी धर्म से जुड़ेहुए नहीं है, बल्कि यह सामाजिक ग्रंथ है। योग धर्म से नहीं बल्कि स्वास्थ्य व संस्कृति से जुड़ा हुआ है।

सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र में परिवर्तन के अर्न्तगत नीति आयोग ने संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम यू०एन०डी०पी० के सहयोग से सामाजिक क्षेत्र में सर्वोत्तम कार्य प्रणालियाँ 'एक सार संग्रह 2023 भी जारी किया है– इसमें समाज के कई महत्वपूर्ण घटक शामिल है–स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, पेयजल और स्वच्छता, पर्यावरण, खाद्य सुरक्षा, महिला और बाल विकास, आजीविका, सामाजिक सुरक्षा, कौशल विकास आदि। 'परख – यह शिक्षा नीति निर्माण, मूल्यांकन, मानदण्ड और मूल्यांकनकौशल की प्रक्रिया निर्धारित करने पर केन्द्रित एक राष्ट्रीय नियामक है। 'एडटेक'–शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी, साफ्ट वेयर, हाडवेयर का उपयोग है। एडटेक एप्स से भरे स्मार्ट फोन अब शिक्षा का पर्याय बन गये है। कक्षायें अब क्लिक और पोटल तक पहुँच गयी है। स्वयं, दीक्षा, ई पाठशाला, राष्ट्रीय डिजिटल विश्वविद्यालय के रूप में कार्यकर रहे है।

वर्तमान समय में भारतीय समाज में सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तनों के निम्र रूप दृष्टव्य हैं–भारतीय जीवन पद्धति (इंडिका वे) की ओर वापसी देखी जा सकती है। सामान्य रूप से मध्यम वर्ग मंश अत्याधिक

वृद्धि भी देखी गईहै। स्थानीय राष्ट्रीयता के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ रही है। प्राचीन परंपराओं, पद्धतियों, सांस्कृतिक प्रथाओं का सम्मान, समस्टिवाद के प्रति उत्साह भी दिखाई दे रहा है। भारतीय समाज की धमनियों कहलाने वाली नगरीय संस्कृति, जिसे अपार्ट मेंट संस्कृति, सोसाइटी संस्कृति, नागरिक सांस्कृतिक गतिविधियां निरंतर बढ़ रही है, जिससे सामुदायिक भावनाओं में विकास भी दिखाई दे रहा है। नव कल्याणवाद के कारण धार्मिक गतिविधियों में भी तीव्रता आई है। संस्कृति का जागरण देखा जा सकता है। आज कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक साम्राज्यवाद भी बढ़ रहा है। सामांगीकरण अर्थात सामान प्रकृति का बनाने की प्रवृत्ति, विश्व संस्कृतिको समान रूप से स्वीकार कर रही है। आजादी के कितने वर्षों में संचार के क्षेत्र में भी काफी दूरी देश ने तय की है यह भारत की इंफ्रा स्ट्रक्चर क्रांति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। प्रसिद्ध पत्रकार फरीद जकारिया ने लिखा है, ''जहां अमेरिका और यूरोप में मुद्रा स्फीति और संभावित मंदी कोलेकर चिंता का वातावरण है, वहीं भारत के लोग अपने भविष्य कोलेकर रोमांचित है'' टेक्नोलॉजी आधारित नवाचार आज भारत सरकार की प्राथमिकता का क्षेत्र है। स्टार्टअप से लेकर शोध, बढ़ती पेटेंटों की संख्या, भारत में लगातार बढ़ती सड़कों की संख्या, आधार नामक 12 अंकों वाली व्यक्तिगत पहचान प्रणाली, जन धन, डिजिटल लेन देन क्रांति, कोविड संकट के समय, समय का प्रबंधन, नवाचार की बढ़ती संख्या, जिसकी तारीफ विकसित राष्ट्रों ने भी की है। सत्यानडेला, सुंदर पिचई, शांतनु नारायण, पराग अग्रवाल, अरविंद कृष्ण जैसे विराट व्यक्तित्व ने वैश्विक स्तर पर भारतीय आई.टी. प्रतिभा की काबिलियत और अहमियत को स्थापित किया है। आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और कांटम कंप्यूटिंग के आने के आसार हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का वैश्विक केन्द्र भारत के बनने की महत्वाकांक्षा पर अनवरत काम चल रहा है। मैन्युफैक्चरिंग में मोबाइल और सेमीकंडक्टर के रूप में दो बड़ी शुरू आतविश्व के सामने हैं। यह न सिर्फ अन्य देशों पर हमारी निर्भरता खत्म कर सकती है बल्कि नए बाजार को भी बढ़ावा देगी।

हांग झोउ एशियाड में 107 पदकलेकर भारत ने एक इतिहास रच दिया है। उसमें कई विशेषताओं के साथ ही महिला खिलाड़ियों द्वारा आधे पदक की हिस्सेदारी एक महत्वपूर्ण पहलू है। केन्द्रीय खेल एक युवा मामले तथा सूचना प्रसारण मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने कहा 'अब नया भारत खेल महाशक्ति के रूप में उभर रहा है।'' वायु सेना दिवस 2023 के अवसर पर 91वीं वर्ष गांठ पर पहली बार महिला अफसर शैलजा धामी ने परेड की कमान संभाली। निडरद बंगले डी सिंघम के नाम से चर्चित ऊषा किरण, सी०आर०पी०एफ० की पहली लेडी को बराकमाण्डा और गुरिल्ला टैक्टिक व जंगल वार में निपुण है। उनका कहना है 'आप औरतों कोफोर्स का हिस्सा बनने का हौसला दे बाकी काम वह खुद कर लेगी। 2018 का यंग अचीवर ऑफ दॉ ईयर का पुरस्कार भी प्राप्त किया।

इस रोचंद्रयान से वह आज सब कर रहा है जो, नासा और रूस 1970 के दशक में कर चुके हैं, बहुत समय बाद ही सही पर कैपेबिलिटी डेमोंसट्रेशन विश्व के सामने अपनी क्षमता का प्रदर्शन करना, यह किसी भी देश के लिए बहुत आवश्यक है। अंतरिक्ष और सैटेलाइट प्रक्षेपण का एक बहुत बड़ा बाजार है, अभी तक नासा और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी का ही आधिपत्य था, कुछ हिस्सा रूस और जापान का भी, लेकिन भारत के वैज्ञानिकों ने उनकी तुलना में बहुत कम खर्च पर यह प्रक्षेपण करके यह सिद्ध किया है कि भारत एक नए रूप में आज सामने आ रहा है। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धमेन्द्र प्रधान के शब्दा में ''भारतीय ज्ञान परम्परा ने दुनिया की समझ को समृद्ध किया है, मानवता का मार्ग दर्शन किया और वैश्विक चुनौतियों का समाधान पेश किया है। बस श्रेष्ठ और विकसित भारत के लिये अपनी ज्ञान परम्परा को फिर से अपनाने की आवश्यकता है''।

सन्दर्भ सूचीः–

उपर्युक्त समस्त सामग्री का चयन द्वितीयक स्रोतों द्वारा संकलित किया गया है।

1. (दृष्टि) करेंट अफेयर सम्पूर्ण योजना का सार जुलाई 2023, पृष्ठ 130, 132, 133
2. 08 अक्टूबर 2023 हिन्दुस्तान
3. डेलीन्यूज–डी०एल०एस०
4. अनोखी हिन्दुस्तान 02 मार्च 2019